Gujarat University, Ahmedabad

संस्कृत-पाठ्यक्रमः

Sanskrit Syllabus

NEP-2020**, New Course**

B.A. (Hon.) Sanskrit, Semester - 05

Regular and External Students, Effective from June-2025

IMPLEMENTATION FROM JUNE-2025

(Meeting of The Board of Studies in Sanskrit, Gujarat University, Held on 19/-6/2025)

Paper No.	Course Category	Course Title	Credit	IM	EM	Marks
Paper 351	Major courses DSC-C-351	संज्ञाप्रकरणम् (वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी) OR रामायणम् – सुन्दरकाण्डम् (नियतांश:)	04	50	50	100

संज्ञाप्रकरणम् (वैयाकरण-सिद्धान्तकौमुदी) DSC-C-351-A		
Objectives	**विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण की मूल बातें सिखाना।** → पाठ्यक्रम में वैयाकरण-सिद्धांत-कौमुदी का अध्ययन किया जाएगा। → इससे छात्र संस्कृत की रचना और कार्यप्रणाली समझ सकेंगे। **भारतीय भाषाविज्ञान की प्रारंभिक दृष्टि से परिचय कराना।** → शास्त्रीय वैयाकरणों की पद्धति और दर्शन पर बल दिया गया है। → यह अध्ययन आगे के गहन व्याकरणिक अध्ययन की तैयारी कराता है।	
Unit	Unit-1	भट्टोजि दीक्षित एवं कौमुदी का परिचय, भट्टोजि दीक्षित का जीवन और योगदान। वैयाकरणसिद्धांत कौमुदी का स्वरूप एवं विशेषताएँ, कौमुदी को प्रक्रियाग्रंथ रूप में समझना।
	Unit-2	संज्ञाप्रकरण के प्रमुख सूत्र - भाग 1 (1-16) (सूत्रों की सरल व्याख्या सहित अर्थ व प्रयोग, संज्ञा निर्माण की प्रक्रिया और उसका प्रयोग।)
	Unit-3	संज्ञाप्रकरण के प्रमुख सूत्र - भाग 2 (17–34) (सूत्रों की सरल व्याख्या सहित अर्थ व प्रयोग, संज्ञा निर्माण की प्रक्रिया और उसका प्रयोग।)
	Unit-4	त्रिमुनि (पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि) का संक्षिप्त परिचय। प्रमुख वैयाकरणों (जैसे वामन, जयादित्य, नागेशभट्ट, कैयट, हेमचंद्रसूरि आदि) का संक्षिप्त परिचय।
Learning Outcomes	• **पद पहचान:** पाणिनि व्याकरण में अच्, हल्, गुण जैसे संज्ञा पदों की पहचान करना। • **सूत्र अध्ययन की तैयारी :** अष्टाध्यायी के सूत्रों के अध्ययन हेतु आधार तैयार करना। • **सूत्र शैली की समझ :** संक्षिप्त एवं नियम-आधारित व्याकरणिक शैली को समझना। • **शास्त्रों में उपयोगिता :** अन्य भारतीय ज्ञान परंपराओं में इन पदों के प्रयोग को जानना। • **संरचनात्मक दृष्टि :** संस्कृत शब्दों और वाक्यों की रचना को समझना। • **तार्किक चिन्तन :** व्याकरणिक अनुशासन और तर्कशक्ति का विकास करना।	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)

01. संज्ञाप्रकरणम्; प्रो. वसन्तकुमार म. भट्ट श्री सरस्वती पुस्तक भण्डार, अमदावाद

02. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (बालमनोरमा व्याख्या तत्वबोधिनी व्याख्या) भाग १ कारकप्रकरणान्ता, सम्पादक श्री गिरिधर शर्मा, परमेश्वरानन्द शर्मा १९७५ प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास

03. अष्टाध्यायी सूत्रपाठः, पदच्छेद-वृत्ति सहितः विवरण, सम्पादक: प्रोफे गोपालदत्त पाण्डेय चोखम्बा, सुरभारती प्रकाशन.

04. વ્યાકરણ સૂર્યોદય, લેખક: પંડિત રમણલાલ દવે, પ્રકાશક: ગુજરાત વિદ્યા સભા, અમદાવાદ

05. पाणिनीय संज्ञाप्रकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन, लेखक: डॉ. रमेश चंद्र शुक्ल, प्रकाशक: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

06. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका - संज्ञाप्रकरण सहित, लेखक: डॉ. रामनिवास त्रिपाठी, प्रकाशक: मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

07. The Aṣṭādhyāyī of Pāṇini (with English Translation and Notes), Editor/Translator: Srisa Chandra Vasu, Publisher: Motilal Banarsidass Publishers, Delhi

08. Sanskrit Grammar (with focus on Technical Terms like Sañjñās). Author: William Dwight Whitney, Publisher: Harvard University Press

रामायणम् – सुन्दरकाण्डम् (नियतांश:) DSC-C-351-B		
Objectives	• सुंदरकाण्ड की साहित्यिक और आध्यात्मिक विशेषताओं का परिचय कराना। • हनुमान को भक्ति, शक्ति और सेवा के आदर्श रूप में समझना। • चयनित श्लोकों द्वारा संस्कृत काव्य की शैली को समझना। • सुंदरकाण्ड के नैतिक मूल्यों को जीवन प्रबंधन से जोड़ना। • शुद्ध पाठ, अनुवाद और सांस्कृतिक व्याख्या की क्षमता विकसित करना।	
Unit	Unit-1	अध्याय 10, 13, 18, 19, 20, 21 में चयनित श्लोकों का अध्ययन - → भाषागत विशेषताएँ, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार, कथा विषय एवं प्रमुख पात्रों की चर्चा।
	Unit-2	अध्याय 26, 30, 31, 38, 39, 45 में चयनित श्लोकों का अध्ययन - → श्लोकों की भाषा-शैली, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार, कथानक तथा चरित्रों का विश्लेषण।
	Unit-3	अध्याय 46, 48, 49, 50, 51 के श्लोकों का अध्ययन - → भाषिक संरचना, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार, प्रसंगों की व्याख्या एवं पात्रों की भूमिका पर चर्चा।
	Unit-4	रामायण की कथा का काण्डों के अनुसार विवरण, महर्षि वाल्मीकि का जीवन-वृत्त, सुंदरकाण्ड का सारांश। रामायण के संशोधित संस्करणों का इतिहास व सिद्धांत, रामायण पर आधारित साहित्य व दृश्यकलाएँ (फिल्में, धारावाहिक, नाटक)।
Learning Outcomes	• कथा की समझ: हनुमान की यात्रा तथा सीता से भेंट जैसे प्रमुख घटनाक्रमों की स्पष्ट समझ विकसित होगी। • चरित्र-दृष्टि: हनुमान के भक्ति, साहस एवं बुद्धिमत्ता जैसे गुणों की पहचान कर सकेंगे। • भाषा-कौशल: चयनित श्लोकों का शुद्ध पाठ, अनुवाद एवं व्याख्या करने की क्षमता प्राप्त होगी। • दार्शनिक मूल्य: धर्म, सेवा एवं भक्ति जैसे जीवन-मूल्यों को समझ सकेंगे। • व्यावहारिक उपयोग: इन शिक्षाओं को आत्मविकास एवं मानसिक दृढ़ता में लागू कर सकेंगे	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)

01. रामायणम् - सुन्दरकाण्डम् संपादक: प्रो. पी. सी. दवे एवं अन्य प्रकाशक: सरस्वती पुस्तक भंडार, अहमदाबाद

02. रामायणम् - सुन्दरकाण्डम् - संपादक: प्रो. विजय पंड्या - प्रकाशक: पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद

03. શ્રીમદ્વાલ્મીકિ રામાયણ — સુંદરકાંડ (અનુવાદ અને ટિપ્પણીઓ સાથે) સંપાદક: દયારામ દેસાઈ પ્રકાશક: ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમી

04. સુંદરકાંડ (સહજ ભાષામાં અર્થ સાથે) લેખક: મોરારિબાપુ પ્રવચન આધારિત સંપાદન પ્રકાશક: તુલસીપ્રકાશન ટ્રસ્ટ, તળગાજરડા

05. वाल्मीकि रामायण - सुंदरकांड (हिन्दी अनुवाद सहित) प्रकाशक: गीता प्रेस, गोरखपुर

06. सुंदरकांड - भावार्थ व व्याख्या सहित, लेखक/संपादक: पं. रामकिंकर उपाध्याय, प्रकाशक: चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

07. श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् - सुन्दरकाण्डः (टीकासहित) सम्पादक: स्वामी द्वारिकाश्रम, प्रकाशक: चौखम्बा संस्कृत सीरीज

08. Valmiki Ramayana - Sundarakanda, Editor: Bibek Debroy, Publisher: Penguin Books India

09. The Ramayana of Valmiki Vol V ,Sundarkanda ,Ed. by Robert Goldman,First indian Edition 1999.

10. Sundarakanda: The Triumph of Devotion and Courage, Author: Swami Tejomayananda
Publisher: Central Chinmaya Mission Trust (CCMT), Mumbai

Paper No.	Course Category	Course Title	Credit	IM	EM	Marks
Paper 352	Major courses DSC-C-352	सांख्यकारिका OR महाभारत – विराटपर्व (नियतांश:)	04	50	50	100

सांख्यकारिका DSC-C-352-A		
Objectives	• भारतीय दर्शन की मूलभूत दृष्टि को सांख्य दर्शन के माध्यम से समझाने का उद्देश्य। • संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा से विद्यार्थियों को परिचित कराना। • प्रकृति, पुरुष एवं त्रिगुण जैसी सांख्य दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं की सम्यक् समझ प्रदान करना। • पारंपरिक भारतीय और आधुनिक दार्शनिक विचारों के बीच तुलनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।	
Unit	Unit-1	**कारिका 1 से 15 तक** • कारिका का अनुवाद, भावानुवाद और अर्थविस्तार। • सांख्य दर्शन की उत्पत्ति, उद्देश्य एवं अध्ययन की पद्धति का परिचय। • दुःख का स्वरूप, पुरुष की आवश्यकता तथा तत्वचिंतन का आरंभ।
	Unit-2	**कारिका 16 से 30 तक** • कारिका का अनुवाद, भावानुवाद और अर्थविस्तार। • प्रकृति, गुणत्रय (सत्त्व, रजस्, तमस्) की व्याख्या। • कार्यकारण सिद्धांत (सत्कार्यवाद) एवं सृष्टि प्रक्रिया का विवेचन।
	Unit-3	**कारिका 31 से 45 तक** • कारिका का अनुवाद, भावानुवाद और अर्थविस्तार। • पुरुष का स्वरूप, उसकी स्वतंत्रता एवं प्रकृति से भिन्नता। • कैवल्य (मोक्ष) की अवधारणा एवं उसे प्राप्त करने के उपाय।
	Unit-4	**सांख्य दर्शन पर तात्त्विक विचार** • अन्य दर्शनों के साथ तुलनात्मक अध्ययन। • सांख्य सिद्धांतों की आधुनिक जीवन एवं प्रबंधन में प्रासंगिकता।
Learning Outcomes	• प्रकृति, पुरुष, गुण, सत्कार्यवाद और मोक्ष जैसी सांख्य की मूल अवधारणाएँ समझ सकेंगे। • सांख्यकारिका के श्लोकों का अध्ययन कर शास्त्रीय व्याख्या और अर्थ ग्रहण कर सकेंगे। • सांख्य दर्शन का स्थान और योगदान जान सकेंगे तथा अन्य दर्शनों से तुलना कर सकेंगे। • तत्व, ज्ञान और मोक्ष संबंधी चिंतनशील दृष्टिकोण विकसित होगा। • मानसिक संतुलन, विवेक और आत्मनिष्ठा जैसे जीवन मूल्यों से सांख्य सिद्धांत की प्रासंगिकता समझ सकेंगे।	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)

01 સાંખ્યકારિકા, લેખક - ડો. જીતેન્દ્ર જેટલી, ડો. વસંત પરીખ, પ્રકાશક: સરસ્વતી પ્રકાશન, અમદાવાદ

02 સાંખ્યકારિકા, લેખક - ડો. જીતેન્દ્ર દેસાઈ, પ્રકાશક: પાર્શ્વ પ્રકાશન, અમદાવાદ

03 સાંખ્ય-યોગ (ષડ્દર્શન – પ્રથમ ખંડ), લેખક - શ્રી નગીન શાહ, પ્રકાશક: ગુજરાત યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ, અમદાવાદ

04 ભારતીય દર્શન (ષડ્દર્શનો), લેખક - ડો. સી.વી. રાવળ, પ્રકાશક: પ્રજ્ઞા પ્રકાશન, અમદાવાદ

05 સાંખ્યકારિકા - સંપાદક - ડૉ. રવિન્દ્ર ખાંડવાલા, નીરવપ્રકાશન, અમદાવાદ

06 भारतीय दर्शन, लेखक: सर्वपल्ली राधाकृष्णन, प्रकाशक: राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

07 भारतीय दर्शन - (सरल परिचय), लेखक: कृष्णकुमार दीक्षित, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

08 भारतीय दर्शन का इतिहास (भाग 1-5), लेखक: एस. एन. दासगुप्ता, प्रकाशक: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर

09 Classical Sāṅkhya: An Interpretation of Its History and Meaning. Author: Gerald James Larson Publisher: Motilal Banarsidass, Delhi

10 The Sāṅkhya Kārikā of Īśvarakṛṣṇa: A Translation and Commentary, Author: Swami Virupakshananda Publisher:Sri Ramakrishna Math, Chennai

महाभारत – विराटपर्व (नियतांश:) DSC-C-352-B		
Objectives	• विद्यार्थियों को महाभारत के विराटपर्व की कथा की प्रमुख घटनाओं से परिचित कराना। • पाण्डवों के अज्ञातवास की परिस्थितियों और उनके चरित्र की विशेषताओं को समझना। • विराटपर्व में निहित नीति, धैर्य, साहस, सेवा और धर्म जैसे मूल्यों का अध्ययन कराना। • संस्कृत गद्य/पद्य के माध्यम से भाषा-कौशल, अनुवाद और व्याख्या की क्षमता का विकास करना। • आधुनिक जीवन में विराटपर्व के नैतिक संदेशों को अपनाने हेतु प्रेरित करना।	
Unit	Unit-1	विराटपर्व - अध्याय 1, 4, 6, 7 और 8 → इन अध्यायों के प्रमुख श्लोकों का अध्ययन, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार। → कथावस्तु, पात्रों का चरित्र-विश्लेषण एवं भाषागत विशेषताएँ।
	Unit-2	विराटपर्व - अध्याय 9, 10, 11, 13 और 14 → श्लोकों की व्याख्या, भावार्थ एवं संवादों का अध्ययन, श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार। → नीति एवं सामाजिक मूल्य पर चिंतन।
	Unit-3	विराटपर्व - अध्याय 15, 16, 17, 19, 20, 21 → श्लोकों का अनुवाद और अर्थविस्तार। → घटनाक्रम, संवाद, नीति, युद्धकला एवं पात्रों की भूमिका का विश्लेषण।
	Unit-4	→ महाभारत के प्रारंभिक दस पर्वों की कथावस्तु का संक्षिप्त परिचय। → महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास का जीवन एवं साहित्यिक योगदान। → महाभारत के तीन प्राचीन रूपों - जय, भारत, महाभारत का संक्षिप्त विवरण। → महाभारत के वर्तमान स्वरूप की विशेषताओं का अध्ययन।
Learning Outcomes	• विद्यार्थी विराटपर्व की कथा और प्रमुख घटनाओं को समझ सकेंगे। • पाण्डवों के अज्ञातवास और उनके व्यवहारिक बुद्धि व धैर्य का विश्लेषण कर सकेंगे। • धर्म, नीति, शौर्य और सेवा जैसे मूल्यों को पहचान सकेंगे। • संस्कृत श्लोकों का शुद्ध उच्चारण, अनुवाद और अर्थ स्पष्ट रूप से कर सकेंगे। • आधुनिक जीवन में प्रस्तुत मूल्यों की प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)

01 મહાભારત - સંપાદક: દિનકર જોષી, પ્રકાશક: પ્રવિણ પ્રકાશન, રાજકોટ
02 મહાભારતના પાત્રો, લેખક: નાનાભાઈ ભટ્ટ, પ્રકાશક: આર.આર. શેઠ એન્ડ સન્સ, અમદાવાદ
03 विराटपर्व, संपादक - शांतिकुमार पंड्या, प्रकाशक: पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद
04 महाभारत (भाग 1-6), प्रकाशक: गीताप्रेस, गोरखपुर
05 भारतीय महाकाव्य: महाभारत - एक अध्ययन, लेखक: डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, प्रकाशक: साहित्य भवन, आगरा
06 महाभारत का सांस्कृतिक अध्ययन, लेखक - डॉ. रमेशचंद्र शुक्ल, प्रकाशक: चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी
07 The Mahabharata (Complete English Translation), Translator: Kisari Mohan Ganguli, Publisher: Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi
08 The Mahabharata: A Modern Rendering (Vol. 1 & 2), Author: Ramesh Menon. Publisher: Rupa Publications, New Delhi
09 The Essence of the Mahabharata, Author: C. Rajagopalachari, Publisher: Bharatiya Vidya Bhavan, Mumbai

Paper No.	Course Category	Course Title	Credit	IM	EM	Marks
Paper 353	Major courses DSC-C-353	ब्रह्मसूत्र चतुःसूत्री OR भारतीय दर्शनों का प्राथमिक परिचय ।	04	50	50	100

ब्रह्मसूत्र चतुःसूत्री DSC-C-353-A		
Objectives	• विद्यार्थियों को ब्रह्मसूत्र चतुःसूत्री के अध्ययन द्वारा अद्वैत वेदांत के मूलभूत सिद्धांतों से परिचित कराना। • शंकराचार्य द्वारा रचित भाष्य के माध्यम से दार्शनिक तर्क, विश्लेषण और शास्त्रीय शैली को समझाना। • उपनिषदों, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र - इन तीनों प्रस्थानत्रयों के समन्वित ज्ञान की भूमिका को स्पष्ट करना। • भारतीय दर्शन की गूढ़ता और विचारशीलता को आत्मसात करने हेतु एक दृढ़ आधार प्रदान करना।	
Unit	Unit-1	सूत्र-भाष्य-अधिकरण की संकल्पना एवं लक्षण, ब्रह्मसूत्र की रचना-पद्धति की समझ । अधिकरण (विषय, संदेह, पूर्वपक्ष, सिद्धान्त, संगति) की पारंपरिक व्याख्या । शाङ्करभाष्य की शैली और प्रमाण पद्धति का परिचय ।
	Unit-2	**ब्रह्मसूत्र 1.1.1 - "अथातो ब्रह्मजिज्ञासा" तथा 1.1.2 - "जन्माद्यस्य यतः"** ➢ शंकराचार्य भाष्य सहित विस्तृत अध्ययन । ➢ ब्रह्मजिज्ञासा का तात्पर्य और उपनिषदों से सम्बंध । ➢ ब्रह्म के लक्षण और कारणत्व पर विचार । ➢ सूत्रों का अर्थविस्तार ।
	Unit-3	**ब्रह्मसूत्र 1.1.3 - "शास्त्रयोनित्वात्" तथा 1.1.4 - "तत् तु सम्मन्वयात्"** ➢ शास्त्र की प्रमाणिकता और ब्रह्म का शास्त्रजन्य ज्ञान । ➢ वेदों में ब्रह्म का समन्वय एवं शंकराचार्य की व्याख्या । ➢ अद्वैत सिद्धांत की बौद्धिक आधारशिला । ➢ सूत्रों का अर्थविस्तार ।
	Unit-4	➢ **आदि शंकराचार्य का जीवन, कृतियाँ एवं वेदान्त विषयक उनके सिद्धांत** ➢ शंकराचार्य का जीवनवृत्त, ऐतिहासिक दृष्टिकोण ➢ प्रमुख ग्रंथ: भाष्यत्रयी, प्रकरण ग्रंथ, भारतीय दर्शन में उनका योगदान
Learning Outcomes	• विद्यार्थी ब्रह्म, आत्मा, जीव, माया आदि मूलभूत अवधारणाओं की स्पष्ट समझ प्राप्त करेंगे। • अद्वैत वेदांत की तात्त्विक दृष्टि और उसकी तर्कशैली को पहचान सकेंगे। • शाङ्करभाष्य के शास्त्रीय भाषा-शैली, व्याकरणिक प्रयोग और तात्पर्य को समझ सकेंगे। • वेदांत दर्शन को अन्य दर्शनों की तुलना में विश्लेषित कर सकेंगे। • दार्शनिक चिंतन, तर्कशक्ति एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण का विकास कर सकेंगे।	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)

01 ब्रह्मसूत्र-शाङ्करभाष्यम् - चतुःसूत्री, અનુવાદક - ડૉ. લક્ષ્મેશ વી. જોશી, પાર્શ્વ પ્રકાશન, અમદાવાદ

02 શ્રીમદ્ શંકરાચાર્યનું તત્વજ્ઞાન, લેખક: ડૉ. સી.વી. રાવળ, પ્રકાશક: યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ, અમદાવાદ

03 બ્રહ્મસૂત્ર ચતુ:સૂત્રી, સંપાદક - ડૉ. રવિન્દ્ર ખાંડવાલા, નીરવપ્રકાશન, અમદાવાદ

04 शारीरिकभाष्यम् (हिन्दी अनुवाद सहित), संपादक: हनुमानप्रसाद पोद्दार, प्रकाशक: चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

05 श्रीमद् शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त, लेखक: स्वामी सत्यानन्द. प्रकाशक: साहित्य सदन, दिल्ली

06 ब्रह्मसूत्र शाङ्करभाष्य सहित (चतु:सूत्री), प्रकाशक: चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी (संस्कृत मूल सहित हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या)

07 Indian Philosophy (Vol. I & II), Author: Dr. S. Radhakrishnan, Publisher: George Allen & Unwin Ltd., London

08 Vedanta Explained (Vol. I & II), Author: V. S. Ghate, Publisher: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., Delhi
09 The Brahmasutra: The Philosophy of Spiritual Life, Author: Swami Sivananda, Publisher: Divine Life Society, Rishikesh
10 The System of Vedanta, Author: Paul Deussen, Translated by: Charles Johnston, Publisher: Dover Publications, New York

भारतीय दर्शनों का प्राथमिक परिचय DSC-C-353-B

Objectives	• विद्यार्थियों को भारतीय दर्शन की मूल धाराओं और परंपराओं से परिचित कराना। • षड्दर्शन (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा, वेदांत) की तात्त्विक पृष्ठभूमि को समझाना। • आस्तिक और नास्तिक दर्शनों की विचारधाराओं का परिचय कराना। • भारतीय दार्शनिक चिंतन की विशिष्ट तर्कशैली और भाषाशैली से अवगत कराना। • भारतीय दर्शन की सांस्कृतिक, नैतिक और जीवन प्रबंधन की दृष्टि से प्रासंगिकता को रेखांकित करना	
Unit	Unit-1	**भारतीय दर्शन की भूमिका और स्वरूप** ➢ दर्शन का अर्थ, आवश्यकता और उद्देश्य, भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन का तुलनात्मक दृष्टिकोण, आस्तिक और नास्तिक दर्शन का विभाजन ➢ भारतीय दर्शन की विशेषताएँ: आध्यात्मिकता, आत्मदृष्टि, मोक्षपरकता
	Unit-2	**आस्तिक दर्शनों का परिचय (भाग-1)** **न्याय दर्शन** - प्रमाण, तर्क पद्धति, ईश्वर का सिद्धांत **वैशेषिक दर्शन** - द्रव्य, गुण, परमाणु सिद्धांत **सांख्य दर्शन** - प्रकृति-पुरुष सिद्धांत, त्रिगुण, मोक्ष
	Unit-3	**आस्तिक दर्शनों का परिचय (भाग-2)** **योग दर्शन** - अष्टांग योग, चित्तवृत्ति, समाधि **पूर्वमीमांसा** - वेदों की प्रमाणता, यज्ञकर्म, धर्म सिद्धांत **वेदांत दर्शन** - अद्वैत वेदांत का परिचय, ब्रह्म, माया, जीव
	Unit-4	नास्तिक दर्शन और समकालीन दृष्टि, चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन का संक्षिप्त परिचय मोक्ष, कर्म, पुनर्जन्म की व्याख्या, भारतीय दर्शन की आधुनिक प्रासंगिकता जीवन प्रबंधन, नैतिकता और मानवीय मूल्य
Learning Outcomes	➢ विद्यार्थी षड्दर्शन (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत) की मूलभूत अवधारणाओं को समझ सकेंगे। ➢ भारतीय दर्शन की आस्तिक-नास्तिक परंपराओं का परिचय प्राप्त होगा। ➢ दर्शन की भाषा, तर्कपद्धति और विचारप्रणाली को पहचान सकेंगे। ➢ विभिन्न दर्शनों में मोक्ष, आत्मा, ईश्वर, कर्म आदि की व्याख्या की तुलना कर सकेंगे। ➢ भारतीय दर्शन की आधुनिक जीवन में प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।	

पाठ्य-पुस्तकम् एवं संदर्भ-ग्रंथा: (Reference Books)

01 ભારતીય દર્શન, લેખક: ડૉ. સી. વી. રાવળ, પ્રકાશક: પ્રજ્ઞા પ્રકાશન, અમદાવા
02 ષડ્ દર્શન (પ્રથમ અને દ્વિતીય ભાગ), લેખક: શ્રી નગીન શાહ, પ્રકાશક: ગુજરાત યુનિવર્સિટી ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ, અમદાવાદ
03 भारतीय दर्शन का सरल परिचय, लेखक: कृष्णकुमार दीक्षित, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
04 भारतीय दर्शन का इतिहास (खंड 1 से 5), लेखक : डॉ. एस. एन. दासगुप्त, प्रकाशक: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
05 Indian Philosophy (Vol. I & II), Author: Dr. S. Radhakrishnan, Publisher: George Allen & Unwin Ltd., London
06 An Introduction to Indian Philosophy, Author: S. Chatterjee & D. Datta, Publisher: University of Calcutta / Rupa & Co.
07 Darśana-Sāraḥ, लेखक: नीलकण्ठ, प्रकाशक: चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी
08 तत्त्वचिन्तामणिः (न्यायदर्शन), लेखक: गणेश ज्ञान, प्रकाशकः चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी